International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.2 No.19 July – Aug 2022

संस्कृत : एक वैज्ञानिक भाषा

डॉ. सत्येंद्र राऊत
संस्कृत विभाग प्रमुख, जवाहर महाविद्यालय अणदूर
Corresponding Author- **डॉ. सत्येंद्र राऊत**
Email- rautsatyendra07@gmail.com

सारांश

विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक तथा दक्षिण एशियाई भाषाओं की जगत जननी संस्कृत (संस्कृतम्) को माना जाता हैं. ये महज भारतीय भूभाग तक सिमित न होकर इस पूरे उपमहाद्वीप की भाषा हुआ करती थी. हिन्द आर्य वर्ग की इस भाषा को देव वाणी और सुर भारती उपनामों से भी जाना जाता हैं. भारत के इतिहास संस्कृति धर्म (हिन्दू, बौद्ध, जैन) आदि में संस्कृत का बड़ा महत्व हैं. हिन्दूधर्म के अधिकाँश वेद सहित ग्रंथ इसी भाषा में रचे गये हैं| जिस समय विश्व के अन्य देशों में लोग सांकेतिक भाषा से काम चला रहे थे उस समय भारत में संस्कृत भाषा द्वारा ब्रह्म ज्ञान का प्रसार किया जा रहा था. इसके प्रयोग का क्षेत्र अत्यधिक विशाल था. इसका स्पष्ट वर्णन पतंजलि के महाभाष्य में मिलता है. धीरे धीरे देशकाल एवं वातावरण के प्रभाव के कारण संस्कृत भाषा प्राकृत अपभ्रंश एवं आधुनिक बोलियों जैसे खड़ी बोली का रूप धारण करती हुई भी अपने निज स्वरूप से विचलित नहीं हुई, किन्तु स्थिति यहाँ तक पहुंची कि इसे कतिपय लोगों द्वारा मातृ भाषा के रूप में सम्बोधित किया जाने लगा|

प्रस्तावना

प्राचीन काल में कंठस्थीकरण पर बल था तथा सूत्र प्रणाली का प्रयोग किया जा रहा था. संस्कृत अव्याकृत थी अर्थात प्रकृति प्रत्यय आदि के विभाग रहित होने के कारण इसका उपदेश प्रतिपद पाठ विधि से किया जाता था. अर्थात् एक एक करके शब्द पढ़े जाते थे. गौ, अश्व, हस्ती आदि. इस विधि से शिक्षण में अधिक समय लगता था. इस कठिनाई के निवारण हेतु उसके प्रत्येक शब्द को विभक्त कर अध्ययन की सुगमता के लिए वैज्ञानिक विधि का निर्माण किया गया और उसमें प्रकृति प्रत्यय आदि की कल्पना की गई. इसी प्रकार प्राचीन व्याकरण ग्रंथों हमें निगमन विधि का रूप भी दृष्टिगत होता हैं. शास्त्रार्थ तर्क वितर्क प्रश्नोत्तर द्वारा भी शिक्षण को रोचक बनाया जाता था. धीरे धीरे शिक्षा पद्धति में परिवर्तन आया. ब्रिटिश काल से अब तक संस्कृत शिक्षण के क्षेत्र में पाठ्यवस्तु विधि, प्रत्यक्ष विधि विश्लेषणात्मक विधि, व्याख्या विधि एवं व्याकरण विधि का प्रचलन रहा. हम कई वर्षों से पाठ योजना के निर्माण हेतु हरबर्ट की पंचपदी का अनुकरण करते आए हैं.

संस्कृत एक वैज्ञानिक भाषा है वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि विश्व की विभिन्न भाषाओं में से एक संस्कृत भाषा कंप्यूटर के लिए सर्वाधिक उपयुक्त भाषा है, अतः संस्कृत को रोचक बनाने के प्रयास किये जाने चाहिए, ताकि यह अपने अस्तित्व को पुनः प्राप्त कर सके. नेपाल तथा भारत के दस लाख से अधिक लोग आज भी संस्कृत को बोलते एवं समझते हैं. हिन्दू धर्म के समस्त तरह के पूजा पाठ एवं यज्ञ हवन आदि के मंत्र व जाप इसी भाषा में पढ़े जाते हैं. संस्कृत के महत्व के बारे में डॉ.बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर ने कहा था- "संस्कृत पूरे भारत को भाषाई एकता के सूत्र में बांध सकने वाली इकलौती भाषा हो सकती है" इन्होंने संस्कृत को भारत की अधिकारिक भाषा बनाने का प्रस्ताव भी दिया था. विगत कई दशकों से डी डी न्यूज द्वारा संस्कृत आधारित एक कार्यक्रम भी प्रसारित किया जाता हैं.

देश के कई राज्यों में तृतीय भाषा के रूप में इसका अध्यापन कार्य करवाया जाता हैं. कई संस्कृत महाविद्यालय एवं शिक्षण संस्थान भी हमारे देश में हैं. देश के एक राज्य उत्तराखंड में संस्कृत को राज्य की द्वितीय राज भाषा के रूप में भी मान्यता प्राप्त हैं. आपकों जानकारी हो कि हमारे भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित 22 भाषाओं में संस्कृत भी हैं. वर्ष 1969 से भारत में हर साल संस्कृत दिवस मनाया जाता रहा है, आपको जानकारी होगी इस दिन हिन्दुओं द्वारा भाई बहिन का पवित्र पर्व राखी

भी मनाया जाता हैं. दोनों भारतीय संस्कृति से जुड़े हुए उत्सव वर्ष 2021 में 22 अगस्त के दिन मनाएं जाएगे.

संस्कृत जो बेहद मधुर सरल एवं सुंदर भाषा भी हैं. हमारे समाज व संस्कृति के निर्माण में इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं. जब हम दस हजार साल पुरानी भारतीय सभ्यता की बात करते है संस्कृत उसका प्रमाण हैं. हमारे अतीत के ज्ञान चाहे वह धर्म ग्रंथों आयुर्वेद चाणक्य की अर्थशास्त्र या चिकित्सा खगोल नक्षत्र विद्या का स्त्रोत संस्कृत ही है. इस भाषा की सहायता के बिना हम अपने अमृत रुपी उस कैवल्य ज्ञान को कभी नहीं पा सकते हैं.

आधुनिक युग मे संस्कृत की महत्ता (Importance of Sanskrit Language in modern world)

संस्कृत विश्व की सब भाषाओं की जननी है. इसके बाद भी यह अपने ही घर भारत में उपेक्षित हो रही है. संस्कृत के कई पक्षधर ही इसे देव वाणी बनाकर सामान्य जन से दूर कर देते है. वास्तविकता यह है कि यह जन वाणी रही है और आज भी बड़ी सरलता से यह जनवाणी बन सकती थी. सामान्य व्यक्ति को प्रेरणा देने और उसे संस्कारित करने की तो इस भाषा की विलक्षण क्षमता है. देश जब स्वतंत्र हुआ तो उस समय देश के नेतृत्व में संस्कृत के प्रति अनुराग था. इसलिए सरकारी संस्थानों के ध्येय वाक्य संस्कृत में ही चुने गये. बाद में सेकुलरवाद ने संस्कृत को प्रष्ठभूमि में धकेल दिया. यहाँ संस्कृत के कुछ ध्येय वाक्य दिए जा रहे है. जो बताते है कि संस्कृत भारत का मन और मस्तिष्क है.

संस्कृत भाषा तो स्वयं ही सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा है । इस भाषा का प्रभाव प्रकृति पर सीधे पड़ता है। कहा तो यह भी जाता है कि इस भाषा के द्वारा पूरे ब्रह्मांड को जोड़ा जा सकता है। भारत में ही इस भाषा को वह स्थान प्राप्त नहीं हो पा रहा है जिसका की यह हकदार है। हमारे देश में कथित आधुनिक लोगों के लिए संस्कृत एक धार्मिक या पोंगा पंथी भाषा है। जैसे योग ने पाश्चात्य जगत से योगा का जामा पहना तभी हमने इस पर गर्व किया , वैसे ही संस्कृत भी संस्कृति का चोला पहन कर जब विदेशों से ख्यात होकर भारत लौटेगा तो हम भी इसे क्रेज के साथ अपनायेंगे । तब तक बस इंतजार कीजिए इसके परं वैज्ञानिक होने का। विज्ञान का मतलब है कि किसी विषय का सैद्धांतिक और प्रायोगिक पक्ष किसी के भी द्वारा प्रयोगशाला में सत्यापित कर पाना जिसका परिणाम हमेशा एक जैसा ही निकलता हो . हालाँकि संस्कृत भाषा का सिद्धांत अन्य सभी भाषाओँ से सबसे अधिक सही और जबरदस्त पक्का है फिर भी इसे वैज्ञानिक नहीं कहा जा सकता क्योंकि किसी भी भाषा के भौतिकी, रसायन, जीव विज्ञान के साथ कोई लेना देना नहीं है. बस इतना रिश्ता है कि भाषा के ज़रिये विज्ञान को समझ सकते, पढ़ सकते , बोल सकते, लिख सकतेहैं आदि.

आप अगर वैज्ञानिक शब्द से साइंटिस्ट का बोध करना चाहते हैं संस्कृत वह भी नहीं है क्योंकि उसके लिए संस्कृत को एक इंसान बनना पड़ेगा, जो कि असंभव है l नैतिकता का रास्ता संस्कृत से होकर ही जाता है. संस्कृत पूर्णत: वैज्ञानिक भाषा है। इसकी वर्णमाला सिर्फ भाषा का उच्चारण मात्र नहीं है बल्कि इसका अपना उच्चारण शास्त्र है। जो व्यक्ति संस्कृत का उच्चारण कर सकता है, वह किसी भी भाषा का सही और स्पष्ट उच्चारण कर सकता है।

संस्कृत भाषा का महत्व इसीलिए है कि जब लोगों को संस्कृत भाषा पढ़ाई जाती है, तो उसे रटाया जाता है। लोग शब्दों का बार बार उच्चारण करते हैं। इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि उन्हें इसका मतलब समझ आता है या नहीं, लेकिन ध्वनि महत्वपूर्ण है, अर्थ नहीं। अर्थ तो आपके दिमाग में बनते हैं। यह ध्वनि और आकृति ही हैं जो आपस में जुड़ रही हैं। आप जोड़ रहे हैं या नहीं, सवाल यही है। तो संस्कृत भाषा इस तरह से बनी, इसीलिए इसका महत्व है और इसलिए यह तमिल को छोडक़र लगभग सभी भारतीय और यूरोपीय भाषाओं की जननी है। तमिल संस्कृत से नहीं आती। यह स्वतंत्र तौर से विकसित हुई है। आमतौर पर ऐसा भी माना जाता है कि तमिल संस्कृत से भी प्राचीन भाषा है। बाकी सभी भारतीय भाषाओं और लगभग सभी यूरोपीय भाषाओं की उत्पत्ति संस्कृत से ही हुई है। संस्कृत जानने से ही हम उपनिषद पढ पायेंगे ।

संस्कृत ही हमारी संस्कृति का प्रतीक है ।संस्कृत मे गले से लेकर ओष्ठ सभी मुख की मासपेशियो का प्रयोग होता है। इससे उन्हे बल मिलता है। समस्त पूजा व विधि के मन्त्र भी संस्कृत भाषा मे ही है। उन्हे समझ पायेंगे। संस्कृत मन्त्रो से हमे ध्यान योग मे सहायता प्राप्त होगी. आयुर्वेद भी संस्कृत मे है, अत: औषधियो का प्रयोग व निर्देश भी जान पायेंगे. संस्कृत बीजगणित आधारित भाषा है। हर शब्द को बोलने से पहले उसका कारक उससे जोड

कर बोलना होता है, जिससे आपकी बुद्धि क्षमता बढती चली जायेगी.

संस्कृत भाषा की वैज्ञानिकता प्राचीन काल से ही भारत का भाषा ज्ञान ग्रीक तथा इटली से कहीं अधिक श्रेष्ठ तथा वैज्ञानिक रहा है । भारत के व्याकरण शास्त्रीयों ने यूरोपियन भाषा विशेषज्ञों को शब्द ज्ञान का विश्लेषण करने की कला सिखायी। यह तब की बात है जब अपने आप को आज के युग में सभी से सभ्य कहने वाले अंग्रेज़ों को तो बोलना भी नहीं आता था। आज से एक हजार वर्ष पूर्व वह उधार में पायी स्थानीय अपभ्रंश भाषाओं में 'योडलिंग' कर के एक दूसरे से सम्पर्क स्थापित किया करते थे। अंग्रेजी साहित्य का इतिहास 1350 से चासर रचित 'केन्टरबरी टेल्स' के साथ आरम्भ होता है जिसे 'Father of English Poetry ' कहा जाता है। विश्व की अन्तर्राष्ट्रीय भाषा अंग्रेज़ी के साथ संस्कृत की सीमित तुलना यदि की भी जाये तो भी संस्कृत की वैज्ञानिक प्रमाणिकता के लिये हमें विदेशियों के आगे गिड़गिड़ाने की कोई आवश्यकता नहीं है.

भारत की सरकार और लोगों को भी अब जागना चाहिए और अँग्रेजी की गुलामी से बाहर निकाल कर अपनी भाषा और संस्कृति पर गर्व करना चाहिए। भारत सरकार को भी 'संस्कृत' को नर्सरी से ही पाठ्यक्रम में शामिल करके देववाणी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाना चाहिए। केवल संस्कृत ही भारत के प्राचीन इतिहास तथा विज्ञान को वर्तमान से जोडने में सक्षम है। यदि हम भारत में संस्कृत की अवहेलना करते रहे तो हम अपने समूल को स्वयं ही नष्ट कर देंगे जो सृष्टि के निर्माण काल से वर्तमान तक की अटूट कड़ी है।

संस्कृत भाषा में वैदिक साहित्य से अतिरिक्त भी अन्य सभी विद्याओं तथा ज्ञान-विज्ञान का बहुत सूक्ष्म अध्ययन उपलब्ध है। संस्कृत हमारे दार्शनिकों, वैज्ञानिकों, गणितज्ञों, कवियों, नाटककारों, व्याकरण आचार्यों आदि की भाषा थी। इसके माध्यम से भारत की उत्कृष्टतम मनीषा, प्रतिभा, अमूल्य चिंतन, मनन, विवेक, रचनात्मक, सर्जना और वैचारिक प्रज्ञा का अभिव्यंजन हुआ है।

व्याकरण के क्षेत्र में पाणिनी और पतंजली (अष्टाध्यायी और महाभाष्य के लेखक) के समतुल्य पूरे विश्व भर में कोई दूसरा नहीं है। खगोलशास्त्र और गणित के क्षेत्र में आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त और भास्कर के कार्यों ने मानव जगत को नवीन मार्ग दिखाया। वहीं औषधि के क्षेत्र में चरक और सुश्रुत ने महत्वपूर्ण कार्य किया।

दर्शन के क्षेत्र में गौतम (न्याय व्यवस्था के जन्मदाता) शंकराचार्य बृहस्पति आदि ने पूरे विश्व भर में विस्तृत दार्शनिक व्यवस्था को प्रतिपादित किया है। ये सब ग्रंथ संस्कृत भाषा की वैज्ञानिकता तथा तार्किकता के द्योतक हैं क्योंकि किसी भी विषय को कम से कम शब्दों में सूत्र रूप में कहना उस भाषा की वैज्ञानिकता को बताता है। संस्कृत भाषा इतनी सक्षम है कि इसमें तकनीकि विचारों को पूरे विशुद्धता, तार्किकता और सुस्पष्टता के साथ व्यक्त किया जा सकता है। विज्ञान में परिशुद्धता कि आवश्यकता होती है, साथ ही विज्ञान को एक लिखित भाषा की जरूरत होती है, जिसमें विचारों को पूरे स्पष्टता और तार्किकता के साथ व्यक्त किया जा सके।

संदर्भ

1. संस्कृत शिक्षण (डॉ. रामशकल पांडेय)
2. दैनिक जागरण (डॉ. रामनिरंजन)
3. भाषा विज्ञान